हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य की समसामयिक संवेदना एवं उसके आयाम

लेखक :अतुल्यकीर्ति व्यास
(शोधार्थी)
जनार्दनराय नागर विद्यापीठ (मान्य) विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान) 313001.
atulyakirti@gmail.com

शब्द 'समसामयिक' में, शब्द 'समय' की भूमिका केन्द्रीय है। 'समय' में 'इक्' प्रत्यय के प्रयोग से 'सामयिक' शब्द बनता है। जिसका अर्थ होता है - समय से संबंधित, समयानुसार या वर्तमान समय का। 01

इस शब्द 'सामयिक' में उपसर्ग 'सम' लगाकर 'शब्द' बनता है 'समसामयिक'। 'सम' उपसर्ग का अर्थ, 'एक ही', 'एक सा', 'सुसंगत' या 'समान' होता है। 02

इस प्रकार 'समसामयिक' शब्द का अर्थ होगा - 'एक ही समय का'। अन्य शब्दों में कहें तो समसामयिक होना, एक प्रकार से एक कालावधि का बोध होना है। इसके अन्तर्गत एक ही भाव, एक ही आशय और एक ही अर्थ को ग्रहण करनेवाली प्रवृत्तियों यथा - आधुनिकता और नवीनता का बोध होता है। इस सन्दर्भ में डॉ. नगेन्द्र कहते हैं -''आज के सीमित संदर्भ में आधुनिकता का एक संकुचित अर्थ 'समसामयिक' भी उभर कर सामने आया है।'' 03

'समसामयिक' होने का तात्पर्य, समय के आयाम से किसी कालखण्ड विशेष के समाज, परिवेश में मौजूद मानव-जीवन और जगत् की विभिन्न परिस्थितियों, संवेदनाओं, गतिविधियों एवं संक्रमित होते मूल्यों को देखने व परखने की दृष्टि का नाम है। इसके माध्यम से हमें विशिष्ट प्रकार के समाज और साहित्य को जानने, समझने व परखने की दृष्टि प्राप्त होती है, जो मानव के जीवन में, उनके जीवन-मूल्यों में, उनके जीवन की प्रणाली में होनेवाले परिवर्तनों को प्रभावी अभिव्यक्ति देती है।

सारररूप में कहें तो किसी भी देश और समाज की ज्वलन्त समस्याओं का निरुपण, वहाँ के लोगों द्वारा उन समस्याओं के प्रति संघर्ष एवं उनके उत्थान व पतन की क्रियाएँ, प्रतिक्रियाएँ एवं गतिविधियाँ आदि सभी मिलकर, 'समसामयिक संवेदना' का बोध कराती हैं।

हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य में इस समसामयिक संवेदना को सहज रूप में व्याख्यायित करने के लिये, इसके चार प्रमुख आयामों, यथा - सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एव सांस्कृतिक को आधार बनाना उचित होगा। जिनके माध्यम से हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य की समसामयिक संवेदना को उसके दोनों प्रमुख स्तरों यथा - आधुनिक संवेदना एवं संत्रास संवेदना के धरातल पर समझना आसानी से संभव हो सकेगा।

समसामयिक संवेदना के आधुनिक पक्ष को व्याख्यायित करते हुए डॉ. विश्वंभर नाथ उपाध्याय कहते हैं कि - "समसामयिकता का बोध, इस समय का बोध है, अपने वर्तमान का बोध, उस क्षण का बोध, जिसमें हम जी रहे हैं। अतः समसामयिकता वर्तमान-बोध है, और वर्तमान-बोध उस आधुनिकता का एक अंग है जिसका प्रारंभ कुछ समय पूर्व हो चुका है। आधुनिक युग में उत्पन्न होकर, आधुनिक युग की उपलब्धियों और असंगतियों पर विचार करके ही हम समसामयिकता के बोध को समझ सकते हैं, क्यों कि समसामयिकता के बोध में आधुनिक युग के वे तत्त्व सम्मिलित हैं जिन्होंने समसामयिकता को जन्म दिया है।" 04

(अ) सामाजिक आयाम - सामाजिक, सामाजिक का तात्पर्य है, असमाज से संबंधित और संदर्भित। लेकिन समाज माने क्या? "जिस समूह में अनेक व्यक्ति होते हुए भी उन सब में ऐसी अहंकार की संवादिता प्रतिस्थापित हुई है जिसमें वर्तमान सुख-दुःख, राग-द्वेष और भावी आशाएँ और आकांक्षाएँ, एक बनी हुई हैं और जिनका ध्येय एक ही है। ऐसे सुव्यवस्थित, सुग्रंथित और सुविचारी समूह को समाज कह सकते हैं।" 05

प्रत्येक मनुष्य समाज में पैदा होता है, उसी में पलता है, उसी की परंपराएँ एवं संस्कार प्राप्त करता है, इस प्रकार मनुष्य, समाज का आजीवन सदस्य बन जाता है। समाज के सभी सदस्य आपस में सहयोग, संबंध और सौहार्द की अपेक्षा रखते हैं। इसके नहीं होने पर समानता के साथ असमानता, सहयोग के साथ असहयोग, सहिष्णुता के साथ असहिष्णुता आदि परस्पर विरुद्ध भावनाएँ सम्मिलित रहती हैं, और समाज विभिन्न इकाइयों में विभाजित होने लगता है। परिणामस्वरूप एक ही समय में समाज,

सामाजिक एकता, एक साथ विकास, आधुनिकता के प्रभावों, व्यक्तिवादिता, संत्रास, टूटन आदि संवेदनाओं से संपृक्त दिखाई देता है।

हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य भी समसामयिकता के सामाजिक आयाम की सभी संवेदनाओं को बहुत सशक्त ढंग से अभिव्यक्ति देता रहा है, और उसी सशक्त ढंग से सामाजिक मान्यता भी प्राप्त करता रहा है।

सामाजिक एकता -

"हिन्दु की नहीं है, किसी मुस्लिम की नहीं है।
है हिन्द जिसका नाम, शहीदों की ज़मीं है।
हम एक थे, हम एक हैं।"
(हम एक हैं - 1969) [06]

एकसाथ विकास -

"साथी हाथ बढ़ाना, साथी हाथ बढ़ाना।
एक अकेला थक जाएगा,
मिलकर बोझ उठाना।"
(नयादौर - 1957) [07]

आधुनिकता के प्रभाव -

"साला मैं तो साहब बन गया,
साहब बन के कैसा तन गया।
ये बूट मेरा देखो, ये सूट मेरा देखो,
जैसे गोरा कोई लनढन का।"
(सगीना - 1974) [08]

व्यक्तिवादिता -

"ये ज़िन्दगी का क़ारोबार,
ये हसरतें भी बेशुमार।
ख़ुद के गुरुर पर हो सवार,
ख़ुद से ही अपनी जीत-हार है।
ख़ुद ही खड़े हैं ख़ुद के खिलाफ़,
ख़ुद क़श्ती हैं, ख़ुद ही हैं सैलाब।
ख़ुद ही सवाल, ख़ुद ही जवाब,
तूफ़ानों में बन के चिराग़।
क्यूँ जलते जाएँ हैं? क्यूँ जलते जाएँ हैं?
ऐ वक़्त, ऐ वक़्त, हम सब,
हम सब घूमते हैं।" (इंकार - 2013) [09]

संत्रास -

अख़बारों में दीखते हैं,
रोज़ सुबह घर से ये निकलते हैं।
इंसानों में, हर दिन में,
जलते जलते जलते रावण।
(सरकार राज - 2008) [10]

उपभोक्तावाद -

"ख़रीदो, ख़रीदो, ख़रीदो, ख़रीदो।
ख़रीदो, ख़रीदो, ख़रीदो, ख़रीदो।
मोटर गाड़ी, विडियो टीवी, एसी कूलर।
वैक्यूम क्लीनर, ख़रीदो, ख़रीदो।"
(गुड़िया - 1998) [11]

टूटन -

“क़स्में वादे प्यार वफ़ा सब,
बातें हैं, बातों क्या?
कोई किसी का नहीं है झूठे,
नाते हैं, नातों का क्या?”
(उपकार - 1967) [12]

आशा -

“आशाएँ आशाएँ...
कुछ पाने की हो आस-आस,
कुछ अरमाँ हो जो ख़ास-ख़ास।
आशाएँ...।
हर कोशिश में हो वार वार,
हर दरियाओं को आर-पार।
तूफ़ानों को चीर के, मंज़िलों को छीन ले।
आशाएँ खिले दिल की, उम्मीदे हँसे दिल की।
अब मुश्किल नहीं कुछ भी, कुछ भी।
आशाएँ आशाएँ।” (इक़बाल - 2005) [13]

(आ) आर्थिक आयाम - समसामयिकता के आर्थिक आयाम के अन्तर्गत मात्र अर्थशास्त्र को ही सम्मिलित नहीं किया जा सकता, अपितु इसमें मानव-जीवन के सभी पहलुओं का समावेश हो जाता है। समाज को सुखी, और समृद्धिवान बनाने में ‘अर्थ’ की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। यह एक ऐसी आवश्यकता है जिसके अभाव में जीवन की सभी योजनाएँ धराशायी हो जाती हैं। यह सत्य है कि सुदृढ़ अर्थतंत्र ही सुदृढ़ शासनतंत्र का आधार है। महाभारत के अनुसार - “कोश-शून्य राजा बलविहीन हो जाता है।” [14]

प्राचीन शास्त्रों में राजस्व, राजस्व की प्रणाली, राजकीय सहायता, शुल्क, अनुदान आदि विषयों पर गहन चिन्तन किया गया है। इस प्रकार संग्रहीत धन को राजा निजी उपभोग हेतु खर्च नहीं कर सकता था। यह समाज-कल्याण हेतु ही निर्धारित होता था। परन्तु वर्तमान में समसामयिमता का आर्थिक आयाम प्राचीन आदर्शों से अलग हटकर पूँजीवादी व्यवस्था की बुराइयों पर अधिक आश्रित हो गया है और समाज उसके दुष्परिणाम, यथा मनुष्यत्व के स्थान पर मात्र ‘अर्थ’ की स्वीकार्यता, आर्थिक विषमता, संबंधों में बिखराव एवं टूटन आदि के रूप में भोग रहा है।

समसामयिक संवेदना के आर्थिक आयामों को स्वयं में समाहित किये हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य इसके सभी संवेदनीय पक्षों को अत्यन्त सहज, रोचक तथा हृदयस्पर्शी रूप से अभिव्यक्ति देता रहा है -

धन का महत्त्व -

“भक्ति की शक्ति भी यारों,
पैसे से मिल जाती है।
पैसा फैंको, आगे आओ,
लाइन वहाँ रह जाती है।

रिश्ते नाते टूटे, चाहत भी खो जाती है।
पैसे की झंकार सुना दो,
दुनिया गाना गाती है।
पैसा है पावर, पैसा पैसा पैसा पैसा।''
(आ देखें ज़रा - 2009) [15]

आर्थिक विषमता -

''इन उजले महलों के तले,
हम गन्दी गलियों में पले।
सौ-सौ बोझे मन पे लिये,
मैल और माटी तन पे लिये।
दुःख सहते, ग़म खाते रहे,
फिर भी हँसते-गाते रहे, लहराते रहे।
हम दीपक तूफाँ में जले,
हम गन्दी गलियों में पले।''
(भाई बहिन - 1959) [16]

संबंधों में खटास -

''हे ऽ ऽ चार पैसे क्या मिले,
क्या मिले भई क्या मिले।
वो ख़ुद को समझ बैठे ख़ुदा।
वो ख़ुदा ही जाने अब,
होगा तेरा अंजाम क्या?

काहे पैसे पे इतना गुरुर करे है।
यही पैसा तो, अपनों से दूर करे है।''
(लावारिस - 1981) [17]

संबंधों का टूटना -

''चाँदी की दीवार ना तोड़ी,
प्यार भरा दिल तोड़ दिया।
एक धनवान की बेटी ने,
निर्धन का दामन छोड़ दिया।''
(विश्वास - 1969) [18]

(इ) राजनैतिक आयाम - ''राजनीति वह नीति है जिसका सहारा लेकर शासक राज्य की रक्षा और शासन प्रणाली को सुदृढ़ करता है।'' [19]

इस परिभाषा के आधार पर किसी भी राज्य की शासन की व्यवस्था के सभी आयामों, यथा, शासन-प्रणाली, शासन की नीति, विधि, और विधान को राजनीति के अन्तर्गत माना जाता है। हमारे देश में मुख्य रूप से राजतांत्रिक और प्रजातांत्रिक शासन प्रणालियों का चलन रहा है। राजतांत्रिक शासन प्रणाली में राजा ही सर्वोच्च सत्ता होता था और राज्य व प्रजा का रक्षण, सामाजिक नियम व धर्म का पालन एवं न्यायपूर्ण व्यवस्था का निर्वहन करना उसके प्रमुख कार्य थे। जब राजा अपने कर्त्तव्य-पालन में चूक करता तो प्रजा के विद्रोह से उसे सत्ता से हटा दिया जाता था।

प्रजातांत्रिक शासन व्यवस्था में प्रजा अपने प्रतिनिधियों को चुनकर शासन की बागडोर उन प्रतिनिधियों के हाथ में दे देती

है। ये प्रतिनिधि अपने विवेक से शासन व्यवस्था बनाए रखते हैं।

लेकिन मानव, स्वार्थहित में अंधा हो ही जाता है। शासन-व्यवस्था कोई भी रहे, राजतंत्र या प्रजातंत्र, राजा या जनप्रतिनिधि, समय के साथ वे अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लग ही जाते हैं। ऐसे में जनता शोषण और अन्याय का शिकार हो जाती है। व्यवस्था से उसका मोहभंग होने लगता है। शासन की ताक़त उसके मन को कुंठा और संत्रास से भरने लगती है। ऐसे हालातों में समाज का अत्यन्त संवेदनशील तबक़ा साहित्यकार व कलाकार अपने सृजन में जनता की कुंठाओं, हताशाओं और संत्रास की अभिव्यक्ति करने लगता है। यही हैं समसामायिक संवेदना के राजनीतिक आयाम।

हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य भी सदैव से अपनी समसामयिक संवेदना की अभिव्यक्ति में राजनैतिक आयाम के सभी पक्षों यथा, आदर्शवादिता, आशावादिता, व्यवस्था से मोहभंग आदि को अत्यन्त सहजता के साथ, समय-समय पर प्रस्तुत करता रहा है। ये गीतिकाव्य अपने चित्रपटीय कथानकों के साथ तो तालमेल बिठाते ही हैं, साथ ही वास्तविक रूप से समाज की शासन संबंधित विद्रुपताओं और विसंगतियों को भी उचित स्वर देते रहे हैं।

आदर्शवादिता -

"मेहनत हमारा जीवन, मेहनत हमारा नारा।
मेहनत से जगमगा लो, तक़दीर का सितारा।"
(नादान - 1971) [20]

आशावादिता -

"कितने दिन आँखें तरसेंगी,
कितने दिन यूँ दिल तरसेगा।
एक दिन बादल तो बरसेगा।
ऐ मेरे प्यासे दिल, आज नहीं तो कल,
महकेगी ख़्वाबों की महफ़िल।
कितने दिन आँखें तरसेंगी।"
(नया ज़माना - 1971) [21]

व्यवस्था से मोहभंग -

जय इण्डिया, जय जय इण्डिया,
मेरा भारत महान, सौ में से साला,
नब्बे बेईमान। (रण - 2009) [22]

(ई) सांस्कृतिक आयाम - समाज की जीवन पद्धति के सभी पक्षों यथा, रहन-सहन, खान-पान, रीति-रिवाज़ों, धारणाओं को यदि एक साथ संदर्भित किया जाए तो उसे संस्कृति कहा जाएगा और संस्कृति से संदर्भित सभी पक्षों को एक साथ 'सांस्कृतिक' कहा जाएगा। संस्कृति में बाहरी स्वरूप की अपेक्षा आंतरिक स्वरूप को अधिक महत्त्व दिया जाता है। दोनों की अपनी विशेषता है। पहला स्वरूप

व्यावहारिकता को इंगित है तो दूसरा स्वरूप जीवनमूल्यों को अपना आधार बनाता है।

संस्कृति किसी देश, जाति अथवा मानव के उन आन्तरिक गुणों का समष्टिरूप है जो उसके आचार-विचार, कार्य-कलाप और जीवन-पद्धति से अभिव्यक्त होता है। मानव अपने गुणों व मूल्यों के कारण एक दूसरे से चरित्र, धर्म, नैतिकता आदि में भिन्न व्यक्तित्त्व का होता है। प्रत्येक देश, जाति और व्यक्ति के सांस्कृतिक मूल्य अलग-अलग होते हैं और इनकी अभिव्यक्ति भावों व विचारों से होती है जिसका सर्वमान्य सार्वजनिक आदि माध्यम रहा है साहित्य और काव्य।

हमारी संस्कृति के मुख्य गुण हैं दया, प्रेम, करुणा, सहानुभूति, सत्य, अहिंसा, परोपकार, आस्था, क्षमा, उदारता, विश्वबंधुत्व, त्याग, समन्वय, सदाचार आदि नैतिक मूल्यों का पोषण और उनका रक्षण। लेकिन समय के साथ अन्य संस्कृतियों का समामिलन भी हमारी संस्कृति से होता रहता है और समयानुसार सांस्कृतिक मूल्यों में बदलाव आने लगता है। इस बदलाव को समय-समय के साहित्य और इतिहास के अध्ययन से जाना व समझा जा सकता है।

समसामयिक संवेदना के इन सांस्कृतिक आयामों के प्रकाश में, समय के साथ जीवन में आनेवाले परिवर्तनों को साहित्य में यथोचित अभिव्यक्ति प्राप्त होती रही है। हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य की मुख्य शक्ति तो इसका समसामयिक होना ही है। ऐसे में हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य स्वयं को किस प्रकार समसामयिक संवेदना के सांस्कृतिक आयामों से विलग रख सकता है? यहाँ हमें समसामयिक संवेदना के सभी आयामों के, सभी स्वरूपों के, पर्याप्त प्रभावशाली दर्शन प्राप्त होते हैं।

नैतिकता की स्थापना -

"तेरी पनाह में हमें रखना,
सीखें हम नेक राह पे चलना।
कपट करम चोरी बेईमानी,
और हिंसा से हमको बचाना।
नाली का बन जाऊँ ना पानी,
निर्मल गंगाजल ही बनाना।
अपनी निग़ाह में हमें रखना,
तेरी पनाह में हमें रखना।"
(पनाह - 1992) [23]

नैतिक मूल्यों में बदलाव या अवमूल्यन -

"देख तेरे इंसान की हालत,
क्या हो गई भगवान,
कितना बदल गया इंसान।
सूरज ना बदला, चाँद ना बदला,
ना बदला रे आसमान।
कितना बदल गया इंसान।"
(नास्तिक - 1954) [24]

अनैतिकता की स्वीकार्यता -

“भीगे होंठ तेरे, प्यासा दिल मेरा,
लगे अब्र सा, हाँ, मुझे तन तेरा।
जम के बरसा दे, मुझ पर घटाएँ,
तू ही मेरी प्यास, तू ही मेरा जाम।
कभी मेरे साथ, कोई रात गुज़ार,
तुझे सुबह तक मैं, हे ऽ ऽ करूँ प्यार।”
(मर्डर - 2004) [25]

आधुनिकता की पीड़ा -

“कितने अजीब रिश्ते हैं यहाँ पर,
दो पल मिलते हैं, साथ साथ चलते हैं।
जब मोड़ आए तो बचके निकलते हैं।
कितने अजीब रिश्ते हैं यहाँ पर।”
(पेज थ्री - 2011) [26]

त्रास की अभिव्यक्ति आदि -

“रात में ही जागते हैं, ये गुनाहों के घर।
इनकी राहें खोल पाहें,
जो भी आए इधर।
ये है गुमराहों का रास्ता।
मुस्कान झूठी है, पहचान झूठी है।
रंगीनी है छाई, फिर भी है तनहाई।”
(तलाश - 2012) [27]

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दी चित्रपट गीतिकाव्य अपने आरंभ से ही, सततरूप से समसामयिक ही रहा है और समाज से संबंधित व संदर्भित समसामयिकता के प्रत्येक आयाम और उसके विभिन्न पहलूओं को स्वयं में अत्यन्त सरलता, सहजता और सुमधुरता के साथ, रोचक ढंग से प्रस्तुत करता आगे बढ़ रहा है।

सन्दर्भ –

01 श्री भगवद्गोमण्डल (भाग-09)/ पृष्ठ-8715.

02 नालन्दा विशाल शब्द सागर/ सं. श्री नवलजी/ पृष्ठ-1434.

03 नयी समीक्षा/ डॉ. नगेन्द्र/ पृष्ठ-63.

04 जलते और उबलते प्रश्न/ डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय/ पृष्ठ-71.

05 विजीगिषु जीवनवाद (हिन्दी)/ श्री पाण्डुरंग शास्त्री आठवले/ पृष्ठ-04

06 चित्रपट - हम एक हैं (1969)/ गीतकार – इंदीवर/ संगीतकार - उषा खन्ना/ स्वर - मुकेश व साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=G1W5SiSBqEM

07 चित्रपट - नयादौर (1957)/ गीतकार - साहिर लुधियानवीं/ संगीतकार - ओ. पी. नैय्यर/ स्वर – मोहम्मद रफ़ी, आशा भौंसले व साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=4-n_g3GhEkw

08 चित्रपट - सगीना (1974)/ गीतकार - मजरूह सुल्तानपुरी/ संगीतकार - सचिनदेव बर्मन/ स्वर - किशोर कुमार व पंकज मित्र। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=MOSigv2emvE

09 चित्रपट - इंकार (2013)/ गीतकार - स्वानंद किरकिरे/ संगीतकार - शान्तनु मोइत्रा/ स्वर – के. मोहन। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=duiop4rDUz0

10 चित्रपट - सरकार राज (2008)/ गीतकार – प्रशान्त पाण्डेय/ संगीतकार - बापी टुटुल/ स्वर – अभिषेक नैलवाल और साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=6iHFaSvd0ys

11 चित्रपट - गुड़िया (1998)/ गीतकार - निदा फ़ाज़ली व गौतम घोष/ संगीतकार - गौतम घोष व ऑर्थर ग्रासियास/ स्वर - अमित कुमार। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=VzGYf7t1V00

12 चित्रपट - उपकार (1967)/ गीतकार - इंदीवर/ संगीतकार - कल्याणजी आनंदजी/ स्वर - मन्ना डे। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=oIiHAKDfksk

13 चित्रपट - इक़बाल (2005)/ गीतकार - इरफ़ान सिद्दिक़ी/ संगीतकार - सलीम सुलेमान/ स्वर – क्लिंटन सिरेजो, डोमेनिक सिरेजो, के.के. और सलीम मर्चेण्ट। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ - http://www.youtube.com/watch?v=aEoNdhrbUq8

14 हिन्दी शब्द सागर (भाग-8)/ संपादक-श्यामसुंदरदास/ पृष्ठ-451.

15 चित्रपट - आ देखें ज़रा (2009)/ गीतकार – सैय्यद गुलरेज़ और प्रशान्त पाण्डे/ संगीतकार – गौरव दास गुप्ता/ स्वर - दिव्येन्दु मुखर्जी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ - http://www.youtube.com/watch?v=6OVaESMmmXI

16 चित्रपट - भाई बहिन (1959)/ गीतकार – साहिर लुधियानवीं/ संगीतकार - दत्ता नाईक/ स्वर - आशा भौंसले। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ –

http://www.youtube.com/watch?v=whwPFBHG8Og

17 चित्रपट - लावारिस (1981)/ गीतकार – अनजान/ संगीतकार - कल्याणजी आनंदजी/ स्वर - किशोर कुमार। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=tmmmLvmvMvM

18 चित्रपट - विश्वास (1969)/ गीतकार - गुलशन बावरा/ संगीतकार - कल्याणजी आनंदजी/ स्वर - मुकेश। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=dbv7C59SgX4

19 हिन्दी शब्द सागर (भाग-8)/ सं. श्यामसुन्दरदास/ पृष्ठ-451.

20 चित्रपट - नादान (1971)/ गीतकार - हसरत जयपुरी/ संगीतकार - शंकर जयकिशन/ स्वर - मुकेश व साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=rMBNuxY-o9w

21 चित्रपट - नया ज़माना (1971)/ गीतकार - आनंद बक्षी/ संगीतकार - सचिनदेव बर्मन/ स्वर - लता मंगेशकर। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=5BfFHyYEYsQ

22 चित्रपट - रण (2009)/ गीतकार - सरीम मौमिन/ संगीतकार - अमर मोहिले/ स्वर – कुणाल गाँजावाला। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ - http://www.youtube.com/watch?v=Q8G7l_vz7P8

23 चित्रपट - पनाह (1992)/गीतकार - पं. विश्वेश्वर शर्मा/ संगीतकार - नदीम श्रवण/ स्वर - साधना सरगम, उदित नारायण, सारिका, विकी व साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ - http://www.youtube.com/watch?v=mSNLWdlaNGA

24 चित्रपट - नास्तिक (1954)/ गीतकार -प्रदीप/ संगीतकार - सी. रामचन्द्र/ स्वर – प्रदीप। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ - http://www.youtube.com/watch?v=-KYJvunDW98

25 चित्रपट - मर्डर (2004)/ गीतकार - सईद क़ादरी/ संगीतकार - अनु मलिक/ स्वर – कुणाल गाँजावाला। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ - http://www.youtube.com/watch?v=s9GVvT-z7ew

26 चित्रपट - पेज थ्री (2011)/ गीतकार - संदीप नाथ/ संगीतकार - समीर टंडन/ स्वर – सुरेश वाडेकर व लता मंगेशकर व साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ -
(सुरेश वाडेकर) http://www.youtube.com/watch?v=GUIq1LkVMHA
(लता मंगेशकर) http://www.youtube.com/watch?v=SvyhyE6JFn0

27 चित्रपट - तलाश (2012)/ गीतकार - जावेद अख़्तर/ संगीतकार - रामसम्पत/ स्वर – सुमन श्रीधर व साथी। पूरे गीत के लिये यहाँ जाएँ – http://www.youtube.com/watch?v=pcwKeyPNgbk

लेखक : अतुल्यकीर्ति व्यास(शोधार्थी)
जनार्दनराय नागर विद्यापीठ (मान्य) विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान) 313001.
atulyakirti@gmail.com

-000-